PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

जादव का जँगल

Author: Vinayak Varma
Illustrator: Vinayak Varma
Translator: Madhubala Joshi

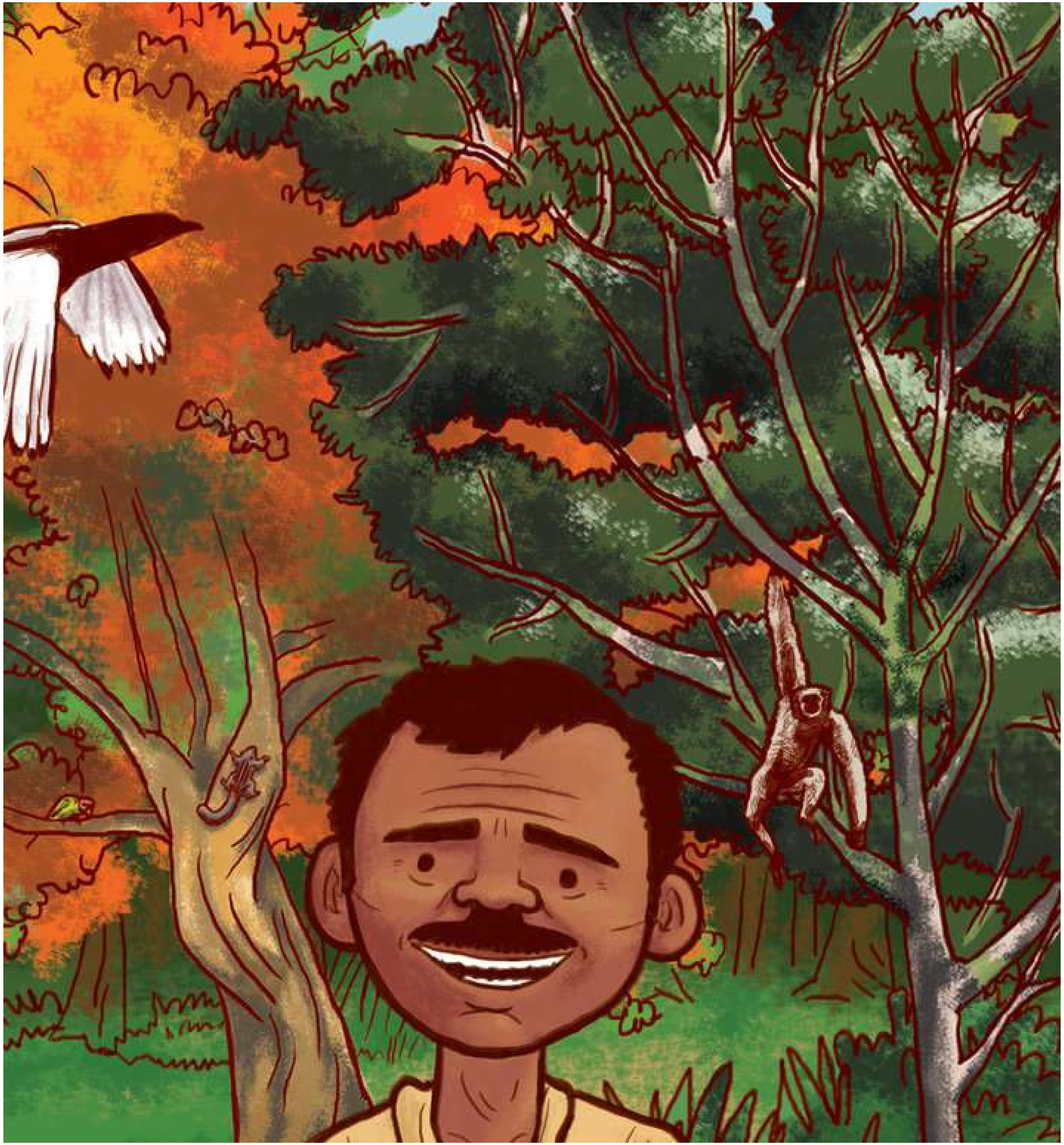

यह हैं जादव। जादव को पेड़ लगाने का जुनून है।

इन्हें कई-पेड़ों-वाली-जगहें अच्छी लगती हैं क्योंकि वह ज़िन्दगी से भरपूर होती हैं।

पेड़-पौधों और जानवरों को देख इन्हें ख़ुशी मिलती है। बिना-पेड़ों-वाली-जगहें देख जादव बहुत उदास हो जाते हैं क्योंकि वहाँ सब कुछ बेजान होता है।

बरसों पहले जादव ब्रह्मपुत्र महानदी के किनारे-किनारे कहीं जा रहे थे कि वह एक बेजान, बिना-पेड़ों-वाली-जगह जा पहुँचे ।

वह जगह बिलकुल सूखी और गर्म थी। वहां की रेत भुरभुरी थी, और उस पर धारियाँ सी नज़र आ रही थीं।

रेत पर धारियाँ? अजीब सी बात थी!

ग़ौर से देखने के लिए जादव थोड़ा क़रीब गये।

दूर से जो धारियाँ नज़र आ रही थीं, वह दरअसल साँप थे!

जादव ने सोचा कि बीती रात पानी बढ़ा होगा जिससे यह किनारे पर आ गए होंगे।

यह साँप सामान्य, स्वस्थ साँपों की तरह सरसरा और लहरा नहीं रहे थे। जादव उनके बीच पहुँचे तो भी न तो उन्होंने फुफकारा, न वहां से भागे और न ही उन्हें काटने की कोशिश की। वह तो बस रस्सियों की तरह थके-हारे, अलसाये से पड़े रहे।

“बेचारे साँप गर्मी से बेहाल हैं! काश, इन्हें यहाँ थोड़ी सी छाया मिल जाती! काश, इस उजाड़ जगह पर कुछ पेड़ होते!”

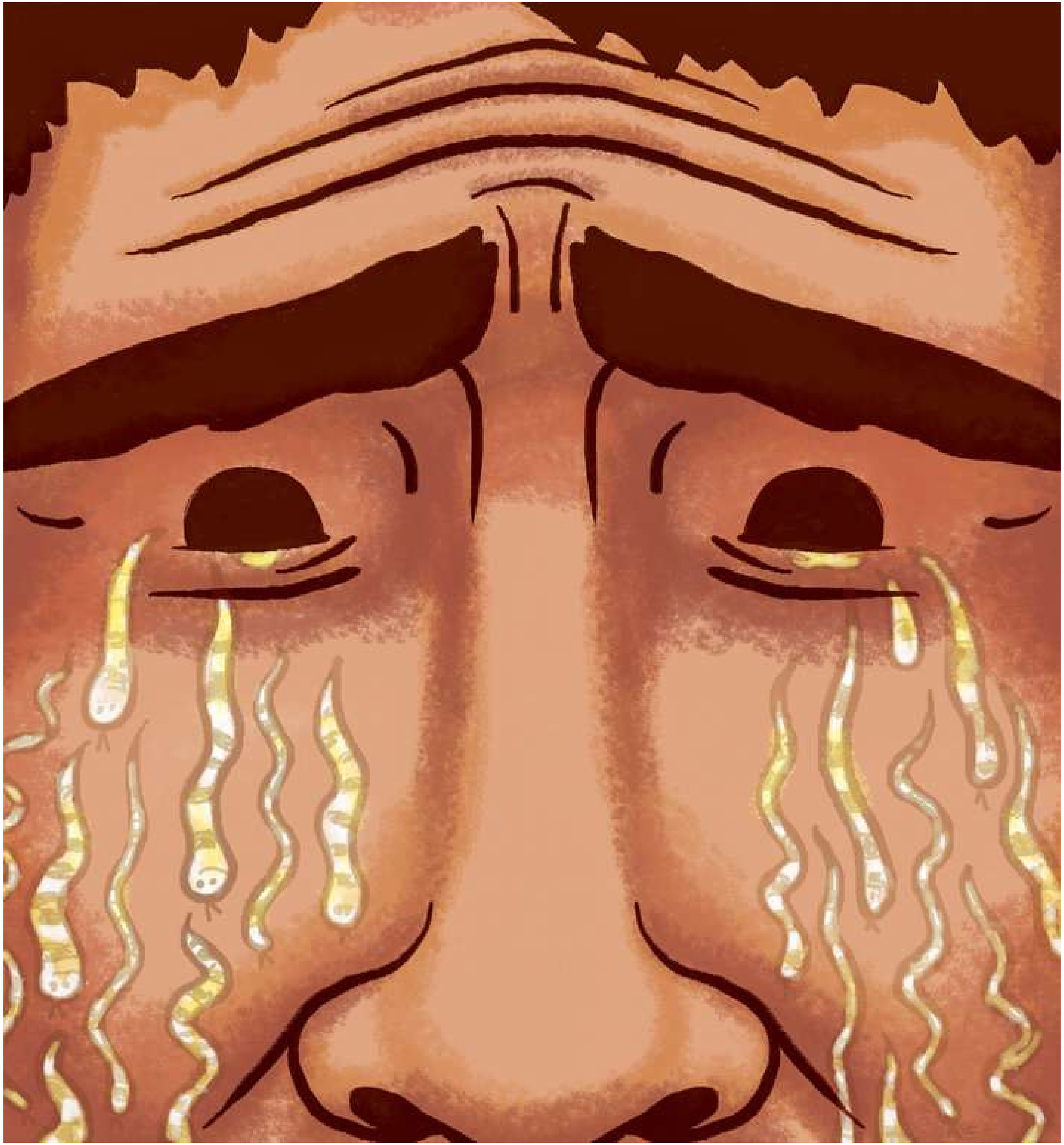

जादव से साँपों को इस तरह धूप में झुलस कर मरते नहीं देखा जा रहा था। यह नज़ारा देख कर वह इतने दु:खी हुए कि वहीं बैठ कर रोने लगे।

लेकिन जल्दी ही उनकी बुद्धि काम करने लगी। "अब और रोना नहीं है। अब से सिर्फ़ कोशिश करनी है!"

वह तेज़ी से अपने गाँव की ओर दौड़े और वहाँ पहुँच कर बाँस के अँखुए एक थैले में ठूँस-ठूँस कर भरने लगे।"दूसरे पेड़-पौधे गर्म रेत में नहीं पनप पाएँगे, लेकिन बाँस लग जाएगा। बाँस बहुत कुछ सह सकता है!"

बाँस के अँखुए लेकर जादव उस बँजर रेतीली जगह पर पहुँचे और उन्हें जगह-जगह रोपने लगे। गर्म मौसम में यह बहुत कठिन काम था और उन्हें इसमें कई बरस लग गये।

एक साल महानद सूखकर एक पतली सी धारा भर रह जाता तो दूसरे साल उसमें बाढ़ आ जाती। कभी उसके सैलाब में काफ़ी सारी रेत बह कर आ जाती, तो कभी उसकी धारा में तमाम रेत बह जाती। ज़ोरदार बारिश के दिन आए और चले गए। लेकिन जादव ने बाँस की रोपाई जारी रखी।

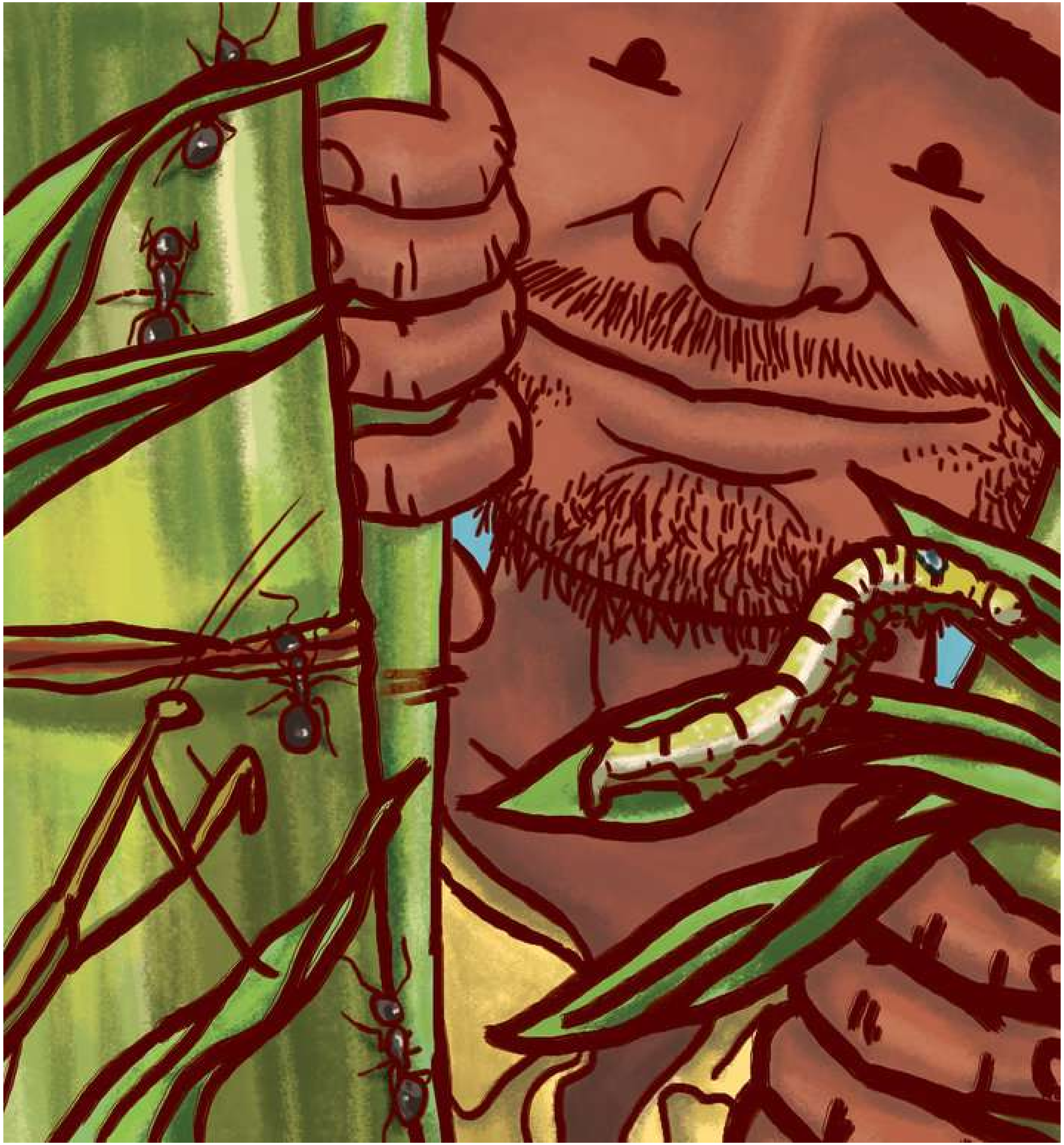

समय आने पर बाँस के अँखुओं में से जड़ें फूटीं, और बाँस के झुरमुट पनपने लगे। बाँसों के बढ़ने के साथ रेत पर छाया रहने लगी, और इस छाया में कीड़े-मकोड़े पनपने लगे।

कीड़े-मकोड़े ज़मीन के अंदर घुस कर अपनी सुरँगें बनाने लगे। बाँस के साये में ज़मीन का हुलिया बदलने लगा। भुरभुरी सफ़ेद रेत की जगह अब भूरी मिट्टी जमने लगी। बेजान रेत जड़ों में जान फूँकने वाली मिट्टी में बदल गयी।

अब जादव को कोई ग़म नहीं था, लेकिन वह पूरी तरह ख़ुश भी नहीं थे।

उन्होंने अपने बाँस के झुरमुट में नज़र दौड़ायी और सोचने लगे,
“ बिना-पेड़ों-वाली-जगह से कुछ-पेड़ों-वाली-जगह बेहतर है,
लेकिन कितना अच्छा हो अगर यह कई-पेड़ों-वाली-जगह बन सके!”
यह बात सोचकर ही वह रोमाँचित हो उठे।

जादव अपने गाँव लौटे, और वहाँ पहुँच कर तरह-तरह के
पेड़-पौधों के बीज और पौध इकट्ठे करने लगे।

उन्होंने वालकोल, अर्जुन, एजार, गुलमोहर, कोरई, मोज और हिमोलू
की पौध और बीजों से तीन बड़े-बड़े थैले भर लिये।

“अब हमारी जगह बँजर नहीं है।
वहां कम से कम कुछ हरियाली है, और वहाँ सूखी रेत नहीं, भूरी मिट्टी है।
अब हम वहाँ इनमें से कोई भी पौध रोप सकते, बहुत कुछ उगा सकते हैं!”

ख़ूब सारे पौधे और बीज लेकर जादव एक कुछ-पेड़ों-वाली-जगह जा पहुँचे, और इस तरह वह खाली जगह देख कर वहाँ पौधे रोपने लगे और बीज बोने लगे।

यह कड़ी मेहनत का काम था।
उनकी पीठ दुखने लगती थी।
उन्हें पौधे लगाते-लगाते कई बरस बीत गये।

गाँव कस्बों में बदल गये। ज़मीन तो ज़मीन, आसमान तक की रँगत में फ़र्क पड़ गया।
सुबह नारँगी और दिन में नीला नज़र आने वाला आसमान कभी बैंगनी तो कभी गुलाबी नज़र आने लगा।
हवा धूल भरी हो गयी, और नदी मटमैली।

लेकिन जादव के हितैषी कीड़े-मकोड़े मिट्टी को उलट-पलट कर उपजाऊ बनाते रहे,
उनके ऊँचे-ऊँचे बाँसों ने छाँव दी और हवा को ठंडा रखा।
और जादव ने ज़्यादा ये ज़्यादा पौधे लगाने की मुहिम को जारी रखा।

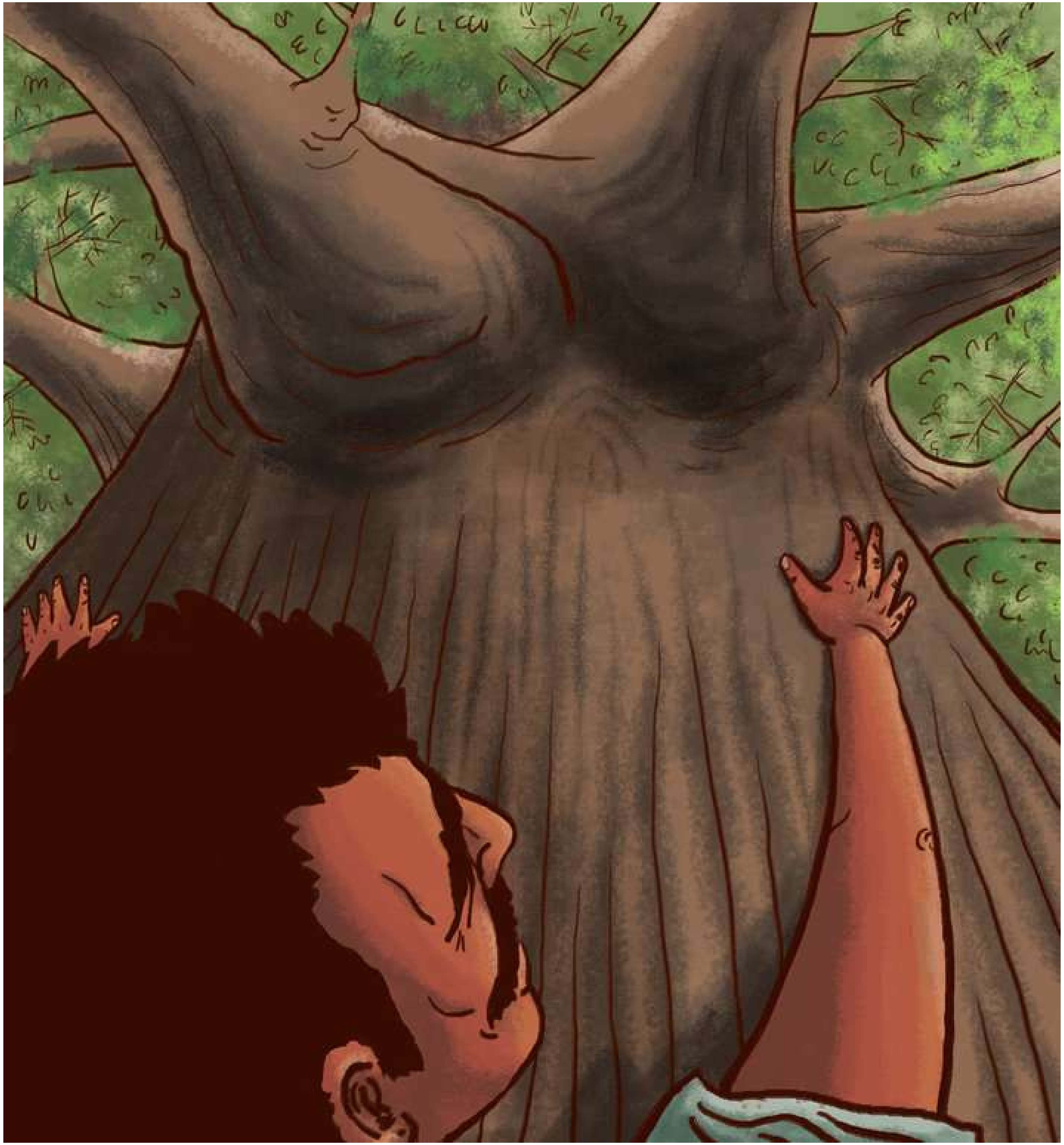

जल्दी ही उनके रोपे वालकोल, अर्जुन, एजर, गुलमोहर, करोई, मोज और हिमोलू के पौधों ने जड़ें पकड़ लीं और बड़े होने लगे।

बड़े होने पर उनके बीज बिखरने लगे। नए बीज से निकले पौधे जड़ें फैलाने लगे। नाज़ुक पौधे मोटे-मज़बूत तने वाले हो गये। तनों से और डालियाँ निकलीं, और डालियों आसमान को छूने की कोशिश करने लगीं।

जो कभी एक बिना-पेड़ों-वाली-जगह हुआ करती थी, ऐसी बँजर और बेकार जगह अब एक शानदार, हरियाली से भरी कई-पेड़ों-वाली-जगह बन गई थी।अब यहाँ हरे-भरे पेड़ लहलहा रहे थे।

लेकिन जहाँ बहुत सारे पेड़ हों, वहाँ पेड़ों पर रहने वाले जीव-जंतु न हों, ऐसा कैसे हो सकता था? एक जीव से शुरू हुआ यह सिलसिला आगे बढ़ता चला गया।

सबसे पहले पक्षी आए।

कोई पास से तो कोई दूर से, तमाम सारे पक्षी मुलाई के लगाए पेड़ों में घोसले बनाने के लिए आ गए।

इनमें गिद्ध भी थे और हवासील भी, सारस भी थे और बत्तखें भी।

सुरीली आवाज़ में गाने वाले पक्षी भी आए, और तीखे स्वर बिखेरने वाले भी पक्षी आए, और वार्बलर, थ्रश, दुम हिलाकर फुदकने वाले पक्षी आए और एक स्वर में रट लगाने वाले पक्षी भी आए जादव के बनाए मधुबन में।

फिर आए जानवर।

वहाँपेड़ों की कमी नहीं थी, इसलिए वहाँ आ बसने के लिए जानवरों का ताँता लग गया। कोई कूद-फाँद कर आया, कोई डाल-डाल पर छलाँगे मारते हुए, तो कोई मटक-मटक कर चलते हुए। गौर, हिरन, खरगोश और गिब्बन आए। हाथी आये, बाघ आए और गैंडे भी आकर बस गए।

आख़िर में साँप आए।

लहराते, बलखाते, सरसराते साँप जादव के पेड़ों की छाँव में ठँडक का मज़ा लेने के लिए।

जब जादव ने देखा कि साँप आ गए हैं, तो उनका जी भर आया। वह धम्म से ज़मीन पर बैठ गए और ख़ुशी के आँसू उनकी आँखों से बह निकले। ख़ुशी के मारे उन्हें साँपों के काटने का भी डर नहीं रहा।

जादव ने अपनी कोशिशों से जिस बिना-पेड़ों-वाली-जगह को पेड़ों से भर दिया था, वहाँ अब जिधर देखो पँख, चोंच, डैने, पँजे, पूँछ और ज़हरीले दाँत नज़र आते थे!

जिधर जाए नज़र, उधर हरियाली का रँग भरा। धूप में भी हरा, छाँव में भी हरा। हर तरफ़ हरा ही हरा!
जादव की कई-पेड़ों-वाली-जगह अब जँगल में बदल चुकी थी! और जादव की ख़ुशी का ठिकाना न था!

इसके बाद जादव के मन में एक और विचार आया -
“एक कई-पेड़ों-वाली-जगह होना अच्छी बात है।
लेकिन कितना अच्छा हो कई कई-पेड़ों-वाली-जगहें हों!”

इसलिए अपना बीज़ों से भरा थैला कंधे पर लाद,
वह निकल पड़े दुनिया भर में पेड़ लगाने।
चलते-चलते उन्हें जहाँ कहीं बिना-पेड़ों-वाली-जगह मिलती, वह वहाँ बीज बोते जाते।
वह पेड़ लगाते रहे।
लगाते रहे। लगाते रहे।

लेकिन दुनिया में बिना-पेड़ों-वाली-जगह बहुत हैं।
और कई-पेड़ों-वाली-जगह बहुत कम।
यह बड़ी बुरी बात है।

लेकिन जादव अब पहले की तरह बैठकर रोने नहीं वाले।

जादव बीज बोते हैं।

बीज बोते जा रहे हैं।
पेड़ लगाते ही जा रहे हैं।

पुराने समय में जितने जँगल थे,
उन सब को फिर से खड़ा करना कठिन काम है।

समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, और हवाओं में ठंडक बढ़ती जा रही है।
कस्बे शहर बन गये हैं और जादव बूढ़े होते जा रहे हैं।
लेकिन अब भी उन्होंने पेड़ लगाना बंद नहीं किया है।

वह पेड़ लगाते जा रहे हैं।
पेड़ लगाते ही जा रहे हैं।

जादव तब तक पेड़ लगाते रहेंगे जब तक कि सारी दुनिया,
एक सुंदर-सलोनी और ख़ुशहाल,
कई-पेड़ों-वाली-जगह नहीं बन जाती।

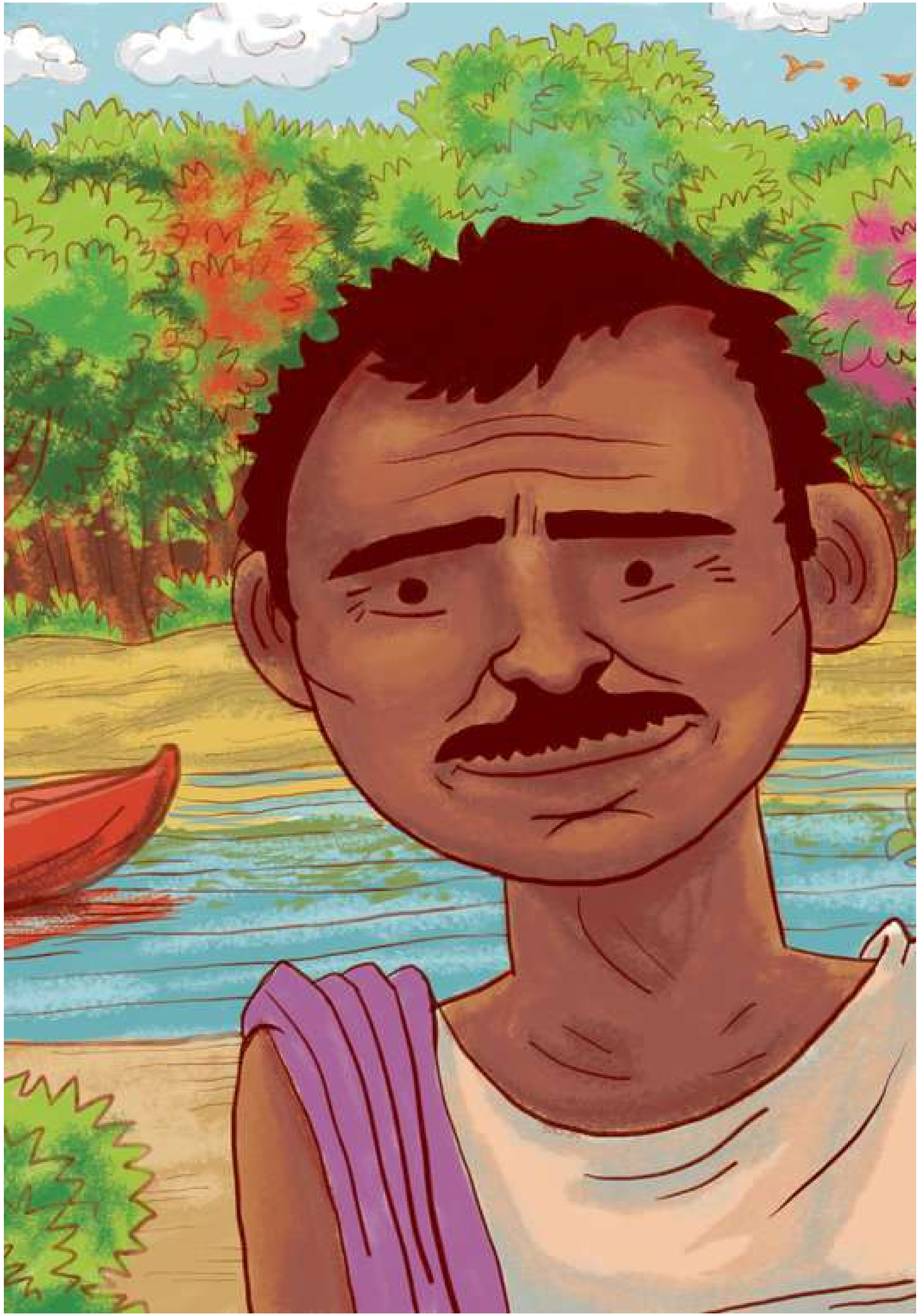

जादव, असल जीवन

जादव 'मुलाई' पायेंग एक पर्यावरण सँरक्षणकर्ता हैं जिन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है, जो कि भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले सबसे बड़े नागरिक सम्मानों में से एक है। जादव असम के माजुली गाँव में रहते हैं।

सोलह साल की उम्र में ब्रह्मपुत्र के रेतीले किनारे पर साँपों को गर्मी में तड़प-तड़प कर मरते देख जादव बेहद दु:खी हुए, और उन्होंने वहाँकुछ छायादार पेड़ लगाने का फ़ैसला किया। सबसे पहले उन्होंने आसानी से पनपने वाले बाँस लगाए। बड़ी मेहनत से एक-एक करके लगातार पेड़ लगाते-लगाते उन्होंने पूरा जँगल ही खड़ा कर दिया। यह 1979 की बात है।

अगले तीन दशकों में जादव ने पेड़ लगा-लगा कर बंजर ज़मीन की सूरत और सीरत बदल डाली। नदी की धारा में साढ़े पाँच सौ हैक्टेयर का रेतीला टापू अब घने जँगल में बदल चुका है जिसमें किस्म-किस्म के पेड़-पौधे और जीव-जंतु पाए जाते हैं। इनमें हाथी, बाघ, कपि, हिरन और कई किस्म के स्थानीय और प्रवासी पक्षी शामिल हैं। जादव ने हर रोज़ ख़ुद जाकर अपने जँगल की देखरेख का सिलसिला जारी रखा है। आज भी उन्हें जहाँ कहीं थोड़ी सी ख़ाली जगह दिखाई देती है, वह वहाँ पेड़-पौधे लगा देते हैं।

करें और सीखें

आम खाएँ और पेड़ लगाएँ, पेड़ के साथ बड़े हो जाएँ!
आम खाया? मज़ा आया? एक और खाने का मन है? बेशक, आप दुकान पर जाकर ख़रीद सकते हैं। लेकिन इससे कहीं ज़्यादा मज़ा आएगा तब, वह भी मुफ़्त में, जब आप अपने खाए आम की गुठली से और आम तैयार करेंगे! बस इसके लिए आपको चाहिए ढेर सारा समय और धैर्य!

सबसे पहले अपने घर के पास एक अच्छी सी ख़ाली जगह ढूँढें। आम खाने के बाद जो गुठली बचा कर रखी है, उसे बोने के लिए ऐसी जगह चुने जहाँ ज़मीन ज़्यादा सख़्त न हो और धूप ख़ूब आती हो। अपने दोस्त, भाई-बहन या किसी बड़े की मदद से आठ-दस इँच गहरा गड्ढा खोद कर बीज को उसमें डालें और मिट्टी से ढक दें।

फिर दो जग पानी डाल कर सींचें। आपको कई हफ़्ते तक मिट्टी सूखने पर सिंचाई करनी पड़ेगी, और इंतज़ार करना पड़ेगा तब कहीं गुठली में से पौधा निकलेगा! पौधे को बड़ा होने में बहुत समय लगता है। इसलिए फिक्र न करें, और जल्दबाज़ी तो बिलकुल भी नहीं!

आपकी बोई हुई गुठली में से अंकुर फूटने के बाद वह आम के स्वस्थ पौधे के रूप में पनप जाए, तो तैयार रहें उसकी सिंचाई, देखभाल और पहले से भी ज़्यादा इंतज़ार के लिए! ध्यान रखें कि कहीं आपके पोधे को कीड़े-मकोड़े या कोई जानवर न खा जाएँ या फिर कोई उसे अपने पैरों तले न रौंद जाएँ। अगर इंतज़ार करते-करते आप ऊबने लगें तो कुछ किताबें पढ़ डालें, कुछ गीत गुनगुना लें, और कुछ और पौधे लगा दें!

कुछ साल में, जब आप पहले से लंबे हो जाएँगे, तब आपका आम का पेड़ भी आपके साथ बढ़ रहा होगा। बढ़ते-बढ़ते वह एक बड़े पेड़ में बदल जाएगा जिस पर आप चाहें तो चढ़ सकेंगे, या फिर उसके साये में पिकनिक कर सकेंगे। तब शुरू होगा असली मज़ा! तब आपका पेड़ आम देने लगेगा, जिन्हें आप और आपके दोस्त खा सकेंगे। इससे भी ज़्यादा बढ़िया बात यह होगी कि आम खाना पसंद करने वाले तमाम दूसरे जीव भी आपके पेड़ की ओर खिंचे चले आएंगे - पक्षी, चींटियाँ, गिलहरियाँ, चमगादड़, बन्दर और मकड़ियाँ।
इनमें से कुछ फल खाने आएँगे , कुछ पेड़ का रस पीने आएँगे, कुछ इसके फूलों का रस पीने आएँगे और कुछ जीव इस पेड़ पर जमघट लगाये जीवों को चट करने के चक्कर में होंगे! सभी पेट भरने के चक्कर में रहेंगे, ऐसा भी नहीं है। कुछ ऐसे भी जीव होंगे जो आपके पेड़ की छाँव में आराम करने, उसकी डालों में कुछ देर चैन की नींद लेने आएँगे। आपका पेड़ अलग-अलग जीवों के लिए अलग काम का होगा!
तब आप रोज़ाना कुछ समय यह देखने में बिता सकते हैं कि आपके आम के पेड़ पर कौन आता है, कब आता है, और क्या करता है। आप जो कुछ देखें उसे एक जगह लिख कर रखें। इसके अलावा, आप जो कुछ देखें उसके चित्र भी बना कर रखें।

देखा आपने, सिर्फ़ एक आम की गुठली के ज़रिये आपने कितना कुछ किया, कितना कुछ जाना?
अब जरा सोचिए, जादव को पेड़ों से भरा अपना पूरा जँगल लगाने में कितना मज़ा आया होगा!

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: जादव का जँगल is translated by Madhubala Joshi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Jadav and the Tree-Place', by Vinayak Varma . © Pratham Books , 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative. This book was created for StoryWeaver, Pratham Books, with the support of Bijal Vachharajani (Guest Editor).

Images Attributions:

Cover page: Jadav hugging a tree, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Jadav in a forest, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Jadav on a sandbar by the Brahmaputra river, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Snakes on a sandbar, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Snakes in the sun, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Jadav crying , by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Jadav planting bamboo, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Insects on a bamboo tree, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Jadav planting saplings, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Jadav Molai hugging a tree , by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 13: Forest , by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Birds in flight, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Animals in the forest, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Hornbill watching Jadav and snakes, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Jadav in a forest filled with trees, animals and birds, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Jadav planting a seed, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Planting a forest, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Looking up at the sky, through a forest, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: Jadav Molai, a conservationist , by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: Planting a mango tree, by Vinayak Varma © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

जादव का जँगल

(Hindi)

जादव दुनिया का सबसे बेहतरीन काम करते हैं - वे जँगल पैदा करते हैं। कैसे? यह कहानी पढ़िए और जानिए।

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.

PRATHAM BOOKS
storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!